अग्र इतिहास का उद्गम

भारत एक प्राचीन देश है। उसकी सभ्यता विश्व में प्राचीनतम मानी जाती है। भारत के प्राचीन इतिहास जानने को जो साधन हैं, जो सामग्री है, उसी का उपयोग हम अग्रवाल जाति के प्राचीन एवं प्रमाणिक इतिहास जानने हेतू कर सकते है। इसमें प्रसिद्ध हस्तलिखित संस्कृत ग्रंथ अग्रवैश्यवंशानुकीर्त्तनम् ऊरुचरितम्, मंजू श्री मूल कल्प, जैन हरिवंश पुराण, महाभारत, रामायाण, संस्कृत साहित्य, पाविनी की अष्टाध्यायी, बौद्ध ग्रंथ, जैन साहित्य, सिक्के, पुरातन गाथाएं, प्राचीन सिक्के, किंवदंतियां एवं शिलालेख आदि प्राचीन सामग्री अत्यंत ही महत्वपूर्ण हैं। इन्हीं के माध्यम से हम अग्र इतिहास को जान सकते हैं। अग्रवाल जाति के प्रामाणिक एवं प्राचीन इतिहास को जानने हेतू कुछ ऐतिहासिक सामग्री ऐसी है जो कि अग्र इतिहास हेतू बहुत ही महत्वपूर्ण है, जिसका संक्षिप्त वर्णन हम यहां कर रहे हैं।

डी.पी. गोयल

अग्रवैश्यवंशानुकीर्त्तनम्

यह एक हस्तलिखित संस्कृत ग्रंथ है। यह संस्कृत ग्रंथ अब भी स्वनामधन्य कुलभूषण हिन्दी भाषा के लेखक व कवि तथा 'अग्रवालों की उत्पत्ति' नामक पुस्तक के रचियता श्री भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र जी के निजी पुस्तकालय में है। इसे उन्होंने एक पुराने ग्रंथ से (जो कि हस्तलिखित था) नकल कराया है। आपके निजी पुस्तकालय में जो उक्त ग्रंथ है, दुर्भाग्यवश उसके प्रारम्भ के 12 पृष्ठ नहीं है पर जो भी पृष्ठ उपलब्ध हैं उनसे महाराजा अग्रसेन जी, उनके जीवन चरित्र तथा अग्रवाल जाति के संबंध में महत्वपूर्ण बातें प्राप्त हुई हैं। पुस्तक के अंत में जो निम्न पंक्ति लिखी हैं–

इति श्री भविष्य पुराणे लक्ष्मी महात्म्यै केदारखंडे
अग्रवैश्य वंशानुकीर्त्तनम् षोडशोअध्याय

इससे विदित होता है कि उक्त ग्रंथ पूर्ण नहीं है अपितु भविष्य पुराण के लक्ष्मी महात्म्य नामक भाग का एक माहत्मय नामक भाग का एक अध्याय है। इस संबंध में डॉ. सत्यकेतु जी ने लिखा है कि – ''भविष्यपुराण या भविष्यता पुराण के अंतर्गत रूप में बहुत सी छोटी–छोटी पुस्तकें उपलब्ध होती हैं, जिनमें कुछ छप चुकी हैं और कुछ छपने वाली हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि यह अग्रवंशानुकीर्त्तनम् भी उन्हीं पुस्तकों में से एक है।'' आपने आगे लिख है कि – यदि इस हस्तलिखित ग्रंथ की पूरी प्रति मिल सकती तो बहुत उत्तम होता। पर पहले बारह पृष्ठों के खो जाने की क्षति इस बात से बहुत कुछ पूर्ण हो गई है कि बाबू हरिश्चन्द्र ने 'अग्रवालों की उत्पत्ति' में उसके आधार पर अनेक महत्वपूर्ण बातें उल्लेखित कर दी थीं। राजा अग्रसेन के पूर्वजों का जो हाल बाबू हरिशचन्द्र ने लिखा है, उसका मुख्य आधार यही पुस्तक थी।

आपने अग्रवैशयवंशानुकीर्त्तनम् के बारे में अपनी पुस्तक में लिखा है कि – यह बहुत प्राचीन और सच्ची ऐतिहासिक अनुश्रुति पर आश्रित प्रतीत होती है।

ऊरुचरितम्

यह भी ग्रंथ है। यह पुस्तक अग्र इतिहास को जानने की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें मथुरा के राजा उरू का वर्णन है। इसी में महाराजा के भ्राता शूरसेन के बारे में भी बहुत महत्वपूर्ण सामग्री है। इसमें शूरसेन के बारे में सविस्तार वर्णन है। इस ग्रंथ से राजा अग्रसेन व शूरसेन उत्त्पत्ति, दोनों का तप करना, अग्रसेन जी का स्वयंवर में नाग कन्या ग्रहण, गौड़ देश बसाना, अठ्ठारह यज्ञ करना तथा अग्रसेन जी के पूर्वजों एवं उनके वंश के बारे में महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध होती है।

सन् 1889 में अगरोहा की खुदाई से जो प्राचीन सिक्के, मूर्तियां तथा मनके, मालाएं एवं भग्नावशेष प्राप्त हुए हैं, वह भी अग्र इतिहास जानने हेतू महत्वपूर्ण ही नहीं अपितु अनिवार्य हैं। यदि अगरोहा की जो खुदाई सन् 1889 में शुरू की गई थी वह अगर संपूर्ण रूप से होती तो आज हम राजा अग्र के संबंध में जो विभिन्न मत और किंवदंतियों का प्रचलन है, उनका खंडन या समर्थन कर सकते थे किन्तु अगरोहा की खुदाई पैसे की तंगी के कारण बंद कर दी गई है। परन्तु जो भी सामग्री थोड़ी बहुत उपलब्ध हुई है, वह भी बहुत महत्वपूर्ण है तथा अग्र इतिहास हेतू आवश्यक जानकारी प्रदान करती है। इस संबंध में डॉ. सत्यकेतु जी के मतानुसार – अग्रवाल जाति का प्राचीन निवास स्थान अगरोहा नगर, जहां अग्रवालों का अपना स्वतंत्र राज्य था। इस समय खंडहर के रूप में पड़ा है और उसकी सब पुरानी इमारतें तथा अन्य अवशेष इस समय पृथ्वी के नीचे दबे पड़े हैं। इनकी खुदाई का प्रारम्भ सन् 1889 में हुआ था पर दुर्भाग्यवश रुपये की कमी के कारण उसे जारी न रखा जा सका। यदि इस खुदाई पुनः शुरू किया जाए तो अग्रवाल इतिहास के लिए बहुत उपयोगी सामग्री प्राप्त होने की संभावना है।

इसके अलावा प्राचीन ग्रंथ, पुराण, अग्रसेन जी तथा अग्रवाल जाति के ऊपर जो विभिन्न लेखकों द्वारा पुस्तकें लिखी गई हैं, वह भी अग्र इतिहास जानने के लिए आवश्यक हैं।

जहां हमें आज अग्र इतिहास जानने हेतू प्राचीन ग्रंथों, शिलालेखों आदि का सहारा लेना है। वहां भाटों के गीत जो कि अग्र इतिहास जानने हेतू मुख्य हैं को जानना होगा। भाट परिवार के मुख्य पुरुषों का नाम स्मरण कराते हैं और जो महत्वपूर्ण घटनाएं आदि तत्संबंधी होती हैं उन्हें भी सुनाते हैं। अग्रवाल जाति में भाटों को बहुत उच्च स्थान दिया जाता है। स्वयं राजा अग्रसेन जी ने अपने भांजे जसराज जी को अपना भाट नियक्त किया था।

भाटों से अग्रवाल जाति के विषय में बहुत सी प्राचीन सामग्री गीतों द्वारा हम को प्राप्त होती है। भाट उस पुराने युग का वर्णन करते हैं जब अगरोहा पर राजा अग्रसेन जी का राज्य था, वह अग्रसेन जी से संबंधित समस्त बातें जैसे विवाह, पुत्र, नगर, राज्य शासन, वंशावली आदि समस्त महत्वपूर्ण बातों का दिग्दर्शन करते हैं।

'श्री विष्णु अग्रसेन वंश पुराण' रचियता श्री ब्रह्मनंद जी ब्रह्मचारी ने, जो कि अगरोहा की खुदाई हेतू प्रयत्न कर रहे हैं, अपनी उक्त पुस्तक में भाटों के कुछ गीतों को उनकी ही मूल भाषा में वर्णन किया है, जो कि अपने विशेष महत्व रखते हैं।

राजा अग्रसेन जी के बारे में व उनके वंश के बारे में मार्कण्डेय, मत्स्य, वायु तथा भागवत आदि पुराणों में वर्णन किया गया है कि आपका जन्म वैशालक वंश की ही एक शाखा में हुआ था। पुराणों का विषय अपना है। अग्रसेन जी के बारे में वर्णन करना नही। किन्तु हमें जो भी सामग्री उपलब्ध होती हैं वह बहुत ही महत्व की है।

महाभारत

यह ग्रंथ अग्र इतिहास जानने हेतू अपना विशेष महत्व रखता है। इसमें आग्रेयगण का वर्णन है। इस ग्रंथ के वन पर्व में राजा कर्ण के दिग्विजय का जो वर्णन है उसमें कर्ण द्वारा जिन गणों को हराया था उनमें आग्रेयगण मुख्य था। इस कारण अग्र इतिहास जानने हेतू यह भी महत्व का है। डॉ. सत्यकेतु जी ने अग्रवाल जाति की उत्पत्ति महाभारत के आधार पर इसी आग्रेययण से मानी है।

पाणिनी की अष्टाधायी

इस ग्रंथ में जो संस्कृत में है, राजा अग्र के बारे में वर्णन है। इस कारण यह भी अग्र इतिहास हेतू अपनी विशेषता रखता है।

मंजूश्रीमूलकल्प

यह एक ऐतिहासिक ग्रंथ है। इसमें नागों तथा वैश्यों के बारे में बहुत महत्वपूर्ण एवं आवश्यक सामग्री उपलब्ध होती है। अग्रवालों का प्राचीन समय में नागों से विशेष संबंध रहा है। इस कारण यह ग्रंथ भी अग्र इतिहास हेतू मूल रूप से आवश्यक है। इस ग्रंथ में भारत में वैश्य सम्राटों का भी वर्णन किया गया है।

शिलालेख, मूर्तियों तथा अन्य ऐतिहासिक सामग्री

अग्र इतिहास हेतू सन् 1889 में प्राप्त मूर्तियां, सिक्के, मालाएं, भग्नावशेष तथा सारगर्भित अभिलेख, आनंदपुर प्रशस्ति, प्रभास अभिलेख आदि तत्संबंधी जानकारी भी आवश्यक है।

विदेशी यात्रियों के यात्रा विवरण

युनानी व अन्य विदेशी इतिहासकार जो समय–समय पर भारत आए थे, उन्होंने भारत में उस समय जो देखा व सुना, उसका उल्लेख उन्होंने भारत में वर्णन किया है। वह भारत के पुराने इतिहास के साथ ही अग्र इतिहास के लिए महत्व का है। जैसे ग्रीक लेखकों में टालसी है, जिसने संसार का भूगोल लिखा है, उसने भारत में एक शहर 'आगरा' दिखाया है जो कि वर्तमान में 'अगरोहा' ही है। साथ ही रिसले, क्लर्क, शेरिंग, इब्बूनतूता तथा बुकानन आदि विदेशी इतिहासज्ञ द्वारा लिखित सामग्री भी महत्वपूर्ण है।

इसके अतिरिक्त पंजाब प्रांत का गजेटियर भी है, जिनमें अग्रसेन जी और अगरोहा के बारे में जानकारी मिली है। वह भी बहुत महत्व की है।

इन सब ग्रंथ, शिलालेखों, पुराणों आदि के अतिरिक्त कौटिल्य के अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र व स्मृतियां भी हमें गोत्रों आदि के विषयों के जानने हेतू उपलब्ध हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि अग्रवाल जाति का इतिहास जानने हेतू उपर्युक्त साधनों का होना आवश्यक है।

महाराजा अग्रसेन का काल

अब हम यहां पर महाराजा अग्रसेन जी, उनका काल तथा उनके वंश आदि के बारे में वर्णन कर रहे है। महाराजा अग्रसेन जो अग्रवाल जाति के प्रर्वतक होने के कारण देवतुल्य माने जाते हैं, के जन्म के विषय में इतिहासकारों में काफी मतभेद हैं। कोई इतिहासकार उनका जन्म त्रेतायुग में हुआ बताते हैं और कुछ कलियुग में।

श्री हीरालाल शास्त्री ने अपनी पुस्तक 'वैश्योत्कर्ष' में लिखा है कि – महाराजा अग्रसेन कलि के प्रथम चरण में उत्पन्न हुए।

'अग्रवाल वंश कौमुदी' के अनुसार आपका जन्म त्रेतायुग में हुआ था।

श्री रामचंद्र गुप्ता के अनुसार पुस्तक – 'अग्रवाल जाति का प्रामाणिक इतिहास' में लिखा है कि राजा अग्रसेन जी का जन्म आर्य सम्वत् के अनुसार 1972941572 में राजा महीधर के यहां हुआ था। आपकी माता का नाम मेद कुंवर था जो उस समय मंदसौर राज्य के राजा की पुत्री थीं।

सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता नगेन्द्रनाथ वसु के अनुसार – अग्रसेन से ही अग्रवालों की पश्चिम शाखा का प्रादुर्भाव हुआ। अग्रसेन के पूर्वज वृंदावनवासी थे और मथुरा से बाहर जिन लोगों ने सत्ता प्रसार किया, वे निःसंदेह अग्रंवालों के ही पूर्वज थे।

एक अन्य विद्वान के अनुसार – अग्रसेन के पूर्वज जम्बू का राजा था और महाराज युधिष्ठिर के 1565 वर्ष पश्चात् आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व अग्रसेन जी का प्रादुर्भाव हुआ था।

भाटों के गीतों के अनुसार–
वदि मंगसर शनि पंचमी, त्रेता प्रथम चरण।
अग्रसेन उत्पन्न भये, कह भाखी शिव कर्ण।।

भाट इस बात को भी दोहराते है कि सीता स्वयंवर में शिव धनुष टूटने पर क्रोधित परशुराम जी अग्रोहा होकर गए थे। राजस्थान अग्रवाल संघ के अलवर अधिवेशन में मनुस्मृति के आधार पर प्रो. रामसिंह ने कहा था –

'एतद् देश प्रसूतस्य, एकाशात् अग्रजन्मनेः'

(अर्थात अग्रवंश में जन्में का अर्थ लगा कर प्राचीन जाति कहा था)

(मनुस्मृति अध्याय–3)

श्री शिवशंकर गर्ग के मतानुसार – महाभारत काल के बाद नाग वैश्य राजाओं का उत्थान होता है, जिन्हें जनमेजय समाप्त करता है। अतः अग्रसेन जी का जन्म कलियुग के प्रथम चरण अर्थात् महाभारत काल के आसपास मानें तो नागवंश से संबंध भी समझ आ जाता है।

वर्ष 1964 की श्री अग्रसेन जयंती के शुभ अवसर पर सागर पुरातत्व विभाग के अध्यक्ष श्रीकृष्ण दत्त वाजपेयी ने अग्रसेन और अग्रजाति की प्राचीनता को दर्शाते हुए कहा कि – 'महाभारत काल के तीसरे पर्व में हिसार जिले में अग्रवालों का राज्य था।' यह तथ्य अभी खुदाई पर अग्रदेव और अग्र शब्द अंकित थे।

अग्रवाल समाज की प्राचीन एवं प्रागैतिहासिक परम्पराओं का परिचय देते हुए उन्होंने कहा था कि आग्रेय जनपद भी महाभारत काल में उल्लेखित है। लगभग 700 वर्ष से अग्रवाल नाम प्रचलित है। पुराणों से भी इस बात का दिग्दर्शन होता है कि अग्रवंश अति प्राचीन है।

'एवं सूर्यग्रहै रंशाश्चिमायुस्ततः परम्।
अग्रवंश महा श्रेष्ठमग्रि वैश्यादयोपिच।।
एवं वंश महाश्रेष्ठों धर्मरक्षक केवल।

यदुवशेपु सम्भूतो विष्णु धमति हेतवे।।'

अर्थात सूर्यवंश में महाश्रेष्ठ एवं धर्मरक्षक अग्रवंश हुआ। श्री गुलाबचंद्र ऐरन साहित्य विशारद ने अपनी पुस्तक 'अग्रवाल जाति का प्रमाणिक इतिहास' के पृष्ठ 12 पर महाराजा अग्रसेन जी के बारे में लिखा है कि – राजा श्याम की आठवीं पीढ़ी में महाराज महीधर ने जन्म लिया और इनके पुत्र महाराजा अग्रसेन हुए। आपका जन्म ईसा से 5527 वर्ष प्रथम में हुआ। आपके दो विवाह हुए। प्रथम विवाह केतु नगरी के राजा सुन्दरसेन की की सुन्दरवती नामक कन्या से व दूसरा चम्पावती के राजा धनपाल की कन्या धनपाला से हुआ था।

प्रसिद्ध हस्तलिखित ग्रंथ (आलमगढ़ में) 'कंसासुर वध' के अनुसार आपका जन्म कंस से कई पीढी पहले हुआ था। 'मुख्तसर हालात अग्रसेन' पुस्तक के आधार पर आपका जन्म 2456 कलि के पूर्व होना बताया है। प्रसिद्ध इतिहासकार प्रभुनाथ (बीए.) के मतानुसार – आपका जन्म 1472841972 आर्य संवत् में हुआ था।

स्वनाम धन्य, अग्रकुल हिन्दी साहित्यकार के महान साहित्यकार भारतेन्दु बाबू हरिशचंद्र ने अपनी पुस्तक में आपका जन्म कलि के प्रारम्भ में होना बताया है व आपके पिता महाराजा वल्लभ थे। 'अग्रसेन और अग्रवाल' पुस्तक के लेखक वैद्य कृपाराम जी अग्रवाल ने अपनी पुस्तक के पृष्ठ 4 पर लिखा है कि – कलि के प्रथम दिन महाराजा युद्धिष्ठिर जी परीक्षित को राज्य दे तप करने चले गये। परीक्षित ने साठ वर्ष तक राज्य किया। इसके समय में नागवंश बहुत बलवान हो गया था। उन दिनों में ही प्रताप नगर के राजा वल्लभ जी के पुत्र अग्र ने नाम राजाओं की कन्याओं को प्राप्त किया और हरद्वार में आकर ऋषियों को संगठित कर 30 कलि को अट्ठारह गणराज्यों का अपना राज्य संगठित कर आग्रेय गांव के प्रधान स्थान में अग्रोदक बना कर 18 यज्ञ कर अग्रोहा बसाया। इस बात की साक्षी में 'मंजूश्री मूलकल्प' व जैन हरिवंशश पुराण हस्तलिखित ग्रंथ हैं। आपके कथनानुसार आपका जन्म प्रताप नगर बांसदा में उपर्युक्त समय में हुआ था। वर्तमान में प्रताप नगर बांसदा जिला सूरत में है।

मत्स्य पुराण के अनुसार –विवस्वान के पुत्र मनु के पुत्र नैदिष्ट के पुत्र नाभाग हुए जो वैश्य कुमारी से विवाह करने से (श्राप वश) वैश्यत्व को प्राप्त हुए। उनका पुत्र भलंदन वेदों का मंत्रदृष्टा व प्रतापी राजा हुआ। उनका पुत्र वात्सप्रिय भी मंत्रदृष्टा हुआ। उसके पुत्र मानकिल के पुत्र धनपाल हुए। उसकने आठ पुत्र थे, जिनके विवाह वात्यप्रिय के द्वितीय पुत्र प्रांशु के प्रजाति के विशाल वैशालिक वंशकर्ता की आठ पुत्रियों से हुए। धनपाल के पुत्र शिव के वंश में अग्र बहुत पीढ़ियों पीछे हुए।

(अध्याय 145 श्लोक 116/107 के अनुसार)

जैन हरिवंश पुराण के अनुसार – भगवान नेमिनाथ के समय में एवं श्रीकृष्ण जी के समय में वसु हुआ। जिसका विवाह अग्रसेन (मथुरा के राजा) की पुत्री वसुमति से हुआ। उसका पुत्र सुवसु हुआ जो नागपुर जाकर कोलराज को विजय कर वहां का राजा बना। अपने पूर्वज प्रतापी महीधर के नाम पर इसका नाम श्री महीधर ही पुकारा जाता है। इसकी पुत्री सुनैता से विवाह कर अग्र बलवान बने, पर महत्वाकांक्षा पूरी न हुई। हरिद्वार जा ऋषि – मुनियों को संगठित कर मरुभूमि हिसार में जा नया नगर बसा 18 गणों का संगठन कर अपना वैभव बढ़ाया।

सारवन अभिलेख जो दिल्ली के लाल किले में सुरक्षित है, में लिखा है –

'तस्यां पुर्यास्ति अभि चं वाणिजाय ग्रोतक निवासिनां।
वंश श्रीसाचदेवाख्यसाधुस्त त्रादपधत।।'

अर्थात– उसी पुरी में अग्रोदक निवासी वणिजों के वंश में साचदेव नामी साधु हुआ।

(वैशाख सुदी 6 बुधवार स. विक्रय 1515)

आनंदपुर प्रशस्ति के अनुसार – (जो लखनऊ प्रांतीय संग्रहालय में सुरक्षित है एवं जो हर्ष सम्वत् 287 मार्गशिर वदी 11 भोज प्रतिहार के समय की है) उस काल में भी अग्रवालों का होना सिद्ध करता है।

सारवन अभिलेख व प्रभास अभिलेखों में स्पष्ट है कि ये लोग बीच में काल में, अग्रोदक व अग्र स्थान निवास से अभिमानी महादानी धार्मिक अग्रवाल थे। इन प्रमाणों से तो अग्र की उपस्थिति ही सिद्ध होती है। भाषा विज्ञान की दृष्टि से दिल्ली लाल किले के संग्रहालय मे उपस्थित सारवन शिलालेख का अग्रोदक शब्द स्पष्ट शब्द अग्र का होना सिद्ध करता है।

बहलोल लोधी के काल का एक शिलालेख अग्रवालों की बावडी माचेड़ी ग्राम अलवर में वैशाख सुदी 6 बुधवार सं. 1515 का प्राप्त हुआ है। इस पर अग्र स्थान निवास वाणिक लिखा है।

इस शिलालेख के बारे में वैद्य कृपारामजी का मत है कि इन शिलालेखों का विषय अपना है, महाराजा अग्रसेन का इतिहास लिखना नहीं। पर यह स्पष्ट है कि अग्र के संगठन के पीछे आग्रेयगण यह शब्द पीछे पड़ गया और उस मरु भूमि में जब प्रबंध करने वाले अग्र संगठनकर्ताओं के नाम पर अग्रोदक वह अग्रस्थान व अग्रोतकान्वय आदि शब्दों द्वारा अग्र का होना सिद्ध होता है और रामायण से महाभारत काल तक रोहीतक गण के वे शिवि मालव के बीच में हिसार प्राप्त में आग्रेयगण की उपस्थिति व इस स्थानवासियों का अग्रस्थानवासी अग्रोतकान्वय प्रसिद्धि, अगरोहा व बरवाला की मुद्रओं पर अगाच्च मित्र पदा का लेख स्पष्ट तथा अग्र को कलि प्रथम में होना दर्शाता है।

प्रसिद्ध बौद्ध ऐतिहासिक ग्रंथ 'आर्यमंजूश्री मूलकल्प' के पृष्ठ 651 व 655 के अनुसार द्वापर के अंत में व्यास ऋषि के समय में महीधर, कुमद, अग्र हुए।

प्रसिद्ध संस्कृत ग्रंथ 'उरुचरितम्' के अनुसार – सृष्टि के आदि में ब्रह्म चारों वेदों का ज्ञाता प्राणिमात्र का उद्भव हुआ। उसका विवस्वान के मनु हुआ। मनु के नैदिष्ट और उसके भलंदन मंत्र दृ ष्टा हुए। भलंदन की भार्या मरुत्वती से वात्सप्रिय हुए। वात्सप्रिय के मांकिल हुए, जो प्रताप नगर के राजा बने। इनके आठ पुत्र, शिव, अनिल, नंद, नंल, कुन्द, वल्लभ तथा शेखर थे। नल विरक्त हो हिमालय गए। शेष 7 भाईयों ने 7 महाद्वीपों पर राज्य किया, जम्बू दीप पर शिव ने राज्य किया व उसका कुल ही श्रेष्ठत्व विस्तार को प्राप्त हुआ।

शिव के चार पुत्र बड़ा आनंद और शेष तीन पुत्रों ने अपनी इच्छानुसार योग ले लिया। आनंद से अय और अय से विश्य और आगे चल कर इनके वंश में सुर्दशन हुए। राजा सुदर्शन के सेवती और नलनी नामक दो रानियां थीं। सेवती से धुरन्धर हुआ और धुरन्धर से नान्दिवर्धन हुए। इनसे अशोक से समाधि जिसने संसार में यश प्राप्त किया।

समाधि के वंश में बहुत वर्ष बाद मोहनदास हुए। वह विष्णु भक्त थे। उनके पोते नमिनाथ हुए, जिन्होंने नेपाल को बसाया। नेमिनाथ से वृंद हुए और उनसे गुर्जर और गुर्जर से हरि हुए। हरि से रंग आदि 100 पुत्र हुए। रंग से विशोक से मधु हुए। मधु से महीधर हुए, जो कि शिवभक्त थे। इनने महादेव जी को प्रसन्न कर बहुत वर पाए।

येन बहुवरं लब्ध महादेवं प्रतोष्य हि।
यस्य वै सप्त पुत्रस्तु धनवन्ताः प्रवीणकाः।।
तेषुवल्ल भो नाम पितुद्रव्यस्थ सप्रभुः।
अग्रसेनः शूरसेनः वल्लभस्थ सुतद्रयम।।

इस प्रकार महाराजा महीधर के सात तेजस्वी पुत्र हुए। उनमें सबसे बड़े राजा वल्लभ थे, जिनके घर ही अग्रसेन और शूरसेन दो तेजस्वी पुत्र हुए।

श्री अग्रसेन की अट्ठारह रानियां थी, हर एक के तीन पुत्र व एक पुत्री हुई। सुपात्रा व मादी सूरसेन की दो भार्या थीं। पहली रानी के तीन पुत्र व दूसरी से सात पुत्र उत्पन्न हुए। ये सब प्रतापशाली थे।

नांदा विशाल शब्द कोष, जिसका प्रकाशन नई दिल्ली से हुआ है में अग्रसेन और अग्रवाल जाति के बारे में लिखा है कि – अग्रसेन राजा जनमेजय के एक पुत्र का नाम था तथा अग्रवाल वैश्य जाति की एक शाखा है। किन्तु राजा अग्रसेन के बारे में जो बात यहां पर लिखी गई है वह नितांत ही भ्रमपूर्ण है

एंव इस बात का समर्थन कि अग्रसेन राजा जनमेयल के एक पुत्र थे, किसी भी इतिहासकार ने नहीं किया है। अतः यह मत युक्तिसंगत प्रतीत नहीं होता है। इसके अतिरिक्त महाराजा अग्रसेन और अगरोहा के बारे में हिसार जिले के सरकारी गजेटियर में लिखा है कि–

हिसार से उत्तर पश्चिम में 12 मील की दूरी पर देहली – सिरसा रोड़ पर अगरोहा स्थित है। इसमें संदेह नहीं कि यह नगर किसी समय विशाल नगर की राजधानी तथा समृद्धशाली नगर रहा होगा।

कहा जाता है कि वैश्य जाति के संस्थापक श्री अग्रसेन जी ने इस नगर का निर्माण कराया था। महाराजा अग्रसेन का काल आज से लगभग 2 हजार वर्ष पूर्व माना जाता है।

इतिहासकार वीके. शर्मा ने भी अपनी पुस्तक 'भारतवर्ष का इतिहास' के पृष्ठ 75 पर महाराजा अग्रसेन जी के बारे में लिखा है कि – महाभारत के लेखानुसार तथा हिसार जिले में अग्रोहा नामक स्थान पर प्राप्त चिन्हों से पता चलता है कि सिकन्दर के आक्रमण के पूर्व शिवि जनपद के पूर्व में आग्रेय गणराज्य था। उसकी राजधानी अग्रोदक नामक नगरी थी और अग्रसेन नामक व्यक्ति इस गणराज्य का प्रवर्तक था।

श्री परमेश्वरलाल गुप्त, श्री शंकरलाल हीराचंद्र ओझा एवं काशीप्रसाद जी जायसवाल के मतानुसार अग्रसेन का होना नहीं पाया जाता है।

कुछ विद्वानों का कथन है कि प्राचीन समय में इस देश में सब ही लोग धर्मात्मा व अग्निहोत्री थे। प्रत्येक घर में नित्य नैमित्तिक यज्ञ हुआ करते थे। उन दिनों में यज्ञार्थ अगर की लकड़ी का बहुत व्यापार होता था अस्तु जिस वैश्य समुदाय ने अगर की कृषि तथा व्यापार किया, वह समुदाय अगरवाला हो गया। पश्चात यह शब्द संस्कृत स्वरूप अग्रवाल बना लिया गया। इस युक्ति को अनेंकों व्यक्तियों ने गलत कहा है कि और न ही वे इस बात को अभी तक प्रमाणित कर सके हैं.

महाराजा अग्रसेन और अग्रोहा के बारे में कदीमी अग्रवाल विवाह प्रथा,जिसके प्राक्कथन लेखक राहुल सांस्कृत्यायन तथा लेखिका डॉ. किरण कुमारी गुप्ता हैं, में पृष्ठ 27 पर लिखा है कि –

परीक्षित पुत्र अग्रसेन यदुवंशी क्षेत्रीय थे। इनके भाई जनमेजय ने नाग जाति का दमन किया और कुछ दिन तक तक्षशिला को अपनी राजधानी बनाया। यह अग्रसेन के समकालीन होते है। दूसरे इनकी राजधानी बनाया। यह अग्रसेन के समकालीन होते हैं। दूसरे इनकी राजधानी हस्तिनापुर अग्रोहा के निकट है, अतः हम कह सकते हैं कि इनका समयांतर में उग्रसेन से अग्रसेन नाम हो गया और यही वस्तुतः अग्रवालों की उत्पत्ति से संबंधित होंगे।

पं. ज्वाला प्रसाद मिश्र ने अपनी पुस्तक 'जाति भास्कर' में महाराजा अग्रसेन जी व उनके राज्य के बारे में लिखा है कि अग्रवालों का आदि स्थान प्रताप नगर है, जो कावेरी नदी के ऊपर था। यहीं अग्रवंश के प्रवर्तक, लक्ष्मी के अनन्य उपासक राजा महीधर के वंशज वल्लभ के यहां आपका जन्म हुआ। उनका राज्य हिमालय से लेकर गंगा और यमुना तक विस्तृत था और दक्षिण में उनके राज्य की सीमाएं मारवाड़ को छूती थीं । इनकी अट्ठारह रानियां थीं।

महाराजा अग्रसेन जी के बारे में पंडित बिहारीलाल जैन बाराबंकी वालों का मत हैं कि महाराजा मंधाता के द्वितीय पुत्र अम्बरीष के 50 वीं पीढ़ी में राजा महीधर के सुपुत्र सुनाम धन्य महाराजा अग्रसेन ने वीर निर्माण से 4981 वर्ष पूर्व महेन्द्र सुर (मन्दसौर) के राजा की पुत्री मेघावती के उदर से जन्म लिया।

एक अन्य किंवदंती के अनुसार ईसा से सातवीं शताब्दी पूर्व में काशी में राजा अग्रसेन का होना (चाम्पेय जातक के अनुसार) पाया जाता है। चम्पावती के नाग राजा चाम्पेय की कन्या से उग्रसेन का विवाह हुआ था।

वैसे महाराजा अग्रसेन जी का विवाह भी नाग कन्या से हुआ था किन्तु महाराजा अग्रसेन का काशी से अगरोहा या अगरोहा से काशी आने का कहीं भी कोई जिक्र या वृत्तांत अभी तक अप्राप्त हैं । अतः यह मत युक्तिसंगत प्रतीत नहीं होता हैं।

एक अन्य मत के अनुसार – श्रीकृष्ण के नाना, कंस के पिता महाराजा उग्रसेन मथुरा के शासक थे और इनका विवाह भी नाग कन्या से हुआ था तथा इनका काल भी द्वापर के अंत में माना जाता है। इतिहासकार इनका समय ईसा से लगभग 3 हजार वर्ष पूर्व का अनुमानतः है। अतः हम इनको अग्रवालों का समय 4957 वर्ष पूर्व का अनुमानतः है। अतः हम इनको अग्रवालों के प्रर्वतक महाराजा अग्रसेन नहीं मान सकते है।

वर्तमान में महाराजा अग्रसेन जी के पिता जी के बारे में इतिहासकारों में काफी मतभेद हैं। कुछ विद्वान उन्हें राजा महीधर की संतान मानते हैं, कुछ उन्हें राजा वल्लभ के पुत्र मानते हैं और कुछ इतिहासकार तो उन्हें राजा महीधर के पुत्र वल्लभ के सुपुत्र बताते हैं। अस्तु इस संबंध में कौन सा मत उचित है यह कहना कठिन है।

श्री वक्षीराम पुत्र शिवप्रसाद गर्गस्य ने 'अग्रवाल जाति का इतिहास' का वर्णन करते हुए अपनी पुस्तक के पृष्ठ 3 पर लिखा है कि राजा शासन की अट्ठारहवीं पीढ़ी में राजा महीधर ने जन्म लिया और इन्हीं के पुत्र राजा अग्रसेन हुए। इसके अतिरिक्त 'खुलासा तबारीख' नामक पुस्तक में अग्रवालों की उत्पत्ति के विषय में इस प्रकार का विवरण मिलता है।

चित्र और विचित्र ब्रह्म के अंग से उत्पन्न हुआ। उसने गोवर्धन पर्वत पर जाकर सूर्यदेव की तपस्या की। सूर्यदेव ने प्रसन्न होकर मनोकामना पूर्ण होने का आर्शीवाद दिया और उसको व्यास के पास जाने को कहा। रबरतन ने यमुना के किनारे एक नगर का निर्माण किया। उसके 'सदाभान' हुए तथा सदाभान के 'आधु' पुत्र हुआ। इसी वंशावली में अग्रसेन हुए। अग्रसेन के सत्रह बेटे थे। इन्हीं की संतति अग्रवाल के नाम से विख्यात हुई।

एक किंवदंती यह भी है कि महाभारत के समाप्त होने पर तुलाधारन नामक एक वैश्य काशी में था। इसकी चौथी पीढ़ी में अग्रसेन हुए। किन्तु इस बात की कही भी पुष्टि नहीं होती है कि तुलाधारण नामक वैश्य की चौथी पीढ़ी में महाराजा अग्रसेन का जन्म हुआ और न ही यह मत युक्तिसंगत प्रतीत होता है।

'भविष्यत् पुराण में खिला है कि' – धर्मराज युधिष्ठिर की 17 वीं पीढी में अग्रसेन जी को भगवान राम सुमेरूदेव था। कुछ विद्वानों ने अग्रसेन जी को भगवान राम के समकालीन माना है । उनका कहना है कि – जब परशुराम सिया स्वयंवर में मिथिला जा रहे थे तो रास्ते में अग्रसेन का वैभवशाली नगर अगरोहा पड़ा था और वह इन्हीं अग्रसेन को अग्रवालों का कुल प्रवर्तक मानते हैं। यह मत कहां तक उपयुक्त है, यह कहना कठिन है।

श्री अग्रसेन के चरित्र के रचयिता कवि रत्नदेवी सहाय अग्रवाल ने अपनी पुस्तक के पृष्ठ 2 पर अग्रसेन जी के बारे में लिखा है –

त्रेता का था प्रथम, चरण सुनो उस काल।
जन्म सूरज वंश में, अग्रसेन भूपाल।।
अग्रसेन भूपाल कार सुद एकम तिथि बखानी।
नृप महीधर के पुत्र जिन्हों की चंपावत रजधानी।।
सुन्दर सेन राजा की कन्या सुंद्रावती सयानी।
शील, स्वभाव, सर्वगुण आगर थी नृप की पटरानी।।

इस प्रकार हम देखने हैं कि देवी सहाय जी ने भी आपको महीधर का पुत्र व राजा सुन्दर सेन की कन्या संद्रावती से आपका विवाह होना बताया है।

हिन्दी विश्व कोष के पृष्ठ 81 पर 'अग्रवाल' शब्द की व्याख्या करते हुए शब्द कोष के लेखक ने लिखा है इस इतिहास का निर्विवाद अंश यह है कि अग्रवाल जाति का मूल स्थान अग्रोहक नगर में था जिसे इस समय अगरोहा कहा जाता है।

प्रसिद्ध विदेशी इतिहासकार क्लर्क महोदय ने अपनी पुस्तक में महाराजा अग्रसेन के पूर्वज धनपाल थे। वह प्रताप नगर का राजा था। राजा धनपाल के आठ बेटे थे – शिव, नल, अनल, नंद, कुंद, कुमद, वल्लभ और शुक्र। इसके अतिरिक्त उसकी मुकुटा नाम की एक लड़की भी थी। उसी समय में विशाल नाम का एक और राजा था जिसकी आठ पुत्रियां थीं। उनके नाम निम्नलिखित हैं– पद्मावती, मालती, सुगमा, कांति, श्री, श्रुवा, वंसुधरा और रजा। इन आठ कन्याओं का विवाह राजा धनपाल के आठ पुत्रों के साथ हुई। इसमें से नल तो सन्यासी हो गया। बाकी सातों सात पृथक– पृथक राज्य के स्वामी बने।

शिव के वंश क्रमशः विष्णुराज, सुर्दशन, धुरंधर, समाधि, मोहनदास और नेमिनाथ हुए। इस नेमिनाथ ने नेपाल बसाया और अपने नाम पर उसका नाम नेपाल रखा। इसका लड़का वृंद हुआ और उसने वृंदावन में बड़ा भारी यज्ञ किया। इसी नाम से उस जगह का नाम वृंदावन पड़ा। वृंद का लड़का गुर्जर हुआ। उसने गुजरात पर कब्जा किया। उसका उत्तराधिकारी राजा हरिहर हुए। हरिहर के सौ पुत्र थे। इनमें से एक रंगजी राजा बना। बाकी सब अधर्म का अनुसरण करने के कारण शूद्र हो गए। रंग जी की पांचवीं पीढ़ी में राजा अग्रसेन उत्पन्न हुए।

इस प्रकार हम देखते हैं कि क्लर्क महोदय ने भी इस मत की पुष्टि की है कि महाराजा अग्रसेन हुए थे।

वर्ण विवके चंद्रिका के अनुसार – प्रांशु के छह पुत्र थे– मोद, प्रमोद, बाल, मोदन, प्रमोदन, और शंखकर्ण। प्रमोदन के कोई संतान नहीं थी। अतः उसने शिव को प्रसन्न करने के लिए घोर तपस्या की। महादेव उसक भक्ति से प्रसन्न हुए और उसे यज्ञ करने का आदेश दिया। इस यज्ञ के अग्निकुण्ड से तीन पुत्र उत्पन्न हुए जिनकी संतति अग्रवाल, खत्री और रोनियार कहाई।

इस बात का खंडन डॉ. सत्यकेतू जी ने अपनी पुस्तक 'अगवाल जाति का प्रचीन इतिहास' में किया है और लिखा है कि – इस कथन में कहां तक सच्चाई है, यह कहना कठिन है, विशेषतः अग्रवाल, खत्री और रोनियार जाति का एक ही वंश से होना कुछ संगत प्रतीत नहीं होता।

डॉ. सत्यकेतू विद्यालंकार ने अपनी पुस्तक – अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास के पृष्ठ 98 पर महाराजा अग्रसेन जी के बारे में लिखा हैं कि – अग्रवाल जाति में अग्रसेन का स्थान बहुत महत्व का है। अनेक घरों में उनकी प्रतिमा व चित्र की पूजा की जाती है। अग्रसेन की स्थिति एक देवता से कम नहीं समझी जाती। राजा अग्रसेन एक पृथक वंश कर्ता थे। उनसे एक पृथक वंश का, एक नए राज्य का प्रारम्भ हुआ था। प्राचीन भारत में बहुत से प्रतापी व महत्वाकांक्षी राजकुमार अपना अलग–अलग राज्य बना कर ना वंश की स्थापना करते थे। महाभारत में ऐसे व्यक्तियों को पृथक वंशकर्ता कहा गया है। निःसंदेह राजा अग्रसेन इसी प्रकार के व्यक्ति थे।

वे प्राचीन भारत के प्रसिद्ध राजवंश वैशालक वंश की एक छोटी शाखा में उत्पन्न हुए थे पर उन्होंने अपने प्रताप से एक नया राज्य कायम किया। अपने नाम से एक नए नगर की स्थापना की और एक नए राजवंश का प्रारम्भ किया। इसके आगे उन्होंने पृष्ठ 114 पर लिखा है कि – 'राजा अग्रसेन का काल महाभारत युद्व के बाद कलियुग प्रारम्भ होने पर लगभग 100 वर्ष पीछे है।'

भारत के प्रसिद्ध प्राचीन वैयाकरण पाणिनी अपने ग्रंथ अष्टाधायी में भी दो स्थानों पर अग्र और उसके विविध रूपों अग्रि, आग्रेय और आग्रायण का जिक्र करते हैं। इसके अलावा अष्टाध्यायी में तत्संबंधी दो सूत्रों की भी जिक्र है।

इस बारे में डॉ. सत्यकेतू जी ने अपनी पुस्तक के पृष्ठ 61 पर लिखा है कि – 'ऊपर के दोनों सूत्रों में अग्र और उससे बने हएु आग्रेय, आग्रायण आदि शब्द स्पष्टतया एक वंश जाति को सूचित करते है। यह ध्यान रखना चाहिए कि जिस जाति को हम आजकल अग्रवाल कहते हैं, उसे पुराने समय में अग्रवंश भी कहते थें।'

डॉ. रांगये राघव ने अपनी पुस्तक 'अंधेरा रास्ता' (महायात्रा) के पृष्ठ 654 पर अग्रसेन और अग्रवालों के बारे में लिखा है कि –

आग्रेय गण का एक राजा अग्रसेन कहा जाता है। अनेक पुराणों में वर्णित एक वैशालक वंश है, जिसमें इनका जन्म बताया गया है। वर्णित एक वैशालक वंश है, जिसमें इनका जन्म बताया गया है। अगरोहा इसी आग्रेय गण के राजा का स्थान भी बताया जाता है। ईसा से पहले सिकंदर के आक्रमण के समय में यह नगर था, यह ‘ टालमी’ के भूगोल के पता चलता है। आग्रेयगण को कर्ण महाभारत मे हराया है। वह रोहितक और मालवगणों के बीच मे था। पाणिनी ने भी आग्रेय, अग्र, आग्रि, आग्रायण का उल्लेख किया है। यह गण भी अन्य तत्कालीन गणों की भांति नगर राज्य था। गण में रक्त संबंध होता था। कालांतर में जब गण समाप्त हुए तथा इनका भी अस्तित्व नष्ट हो गया परन्तु यह आग्रयेगण के लोग अग्रवाल जाति के रूप में अग्रवंशी कहलाए।

आपने राजा अग्रसेन के काल को ईसा से एक हजार वर्ष पूर्व का माना है। आपने अपनी दूसरी पुस्तक ‘रैन और चांद’ के पृष्ठ 88 व 89 पर लिखा है कि – ‘विशाल वंशकृत’ राजा था। अग्रसेन भी वंशकृत राजा थे। आग्रयेगण राज्य पुराना था। अग्रसेन ने उसे प्रसिद्ध किया। वे उसके संस्थापक थे या नहीं, यह निश्चित नहीं है। परन्तु अधिक ठीक यही लगता है कि महाभारत में जिस आग्रेयगण राज्य का उल्लेख है वह इसी आग्रयेगण राज्य का नाम है और वह प्राचीन ही है। उस आग्रेयगण का महत्व अग्रसेन के समय बढ़ा । अग्रसेन ने वेशालक वंश से अलग होकर वंश चलाया, वह अग्र कहलाया ओर कालांतर में दोनों को मिला दिया गया। अग्रसेन का राज्य वही था, जहां आग्रयेगण था।

बुकानन नामक विदेशी इतिहासकार ने भी अपनी पुस्तक में महाराजा अग्रसेन जी के बारे में लिखा है कि – अगरोहा महाराजा अग्रसेन की राजधानी थी। वहां पर रहने वालों को समानाधिकार प्राप्त थे एवं वे सब आपस में प्रेम और सहयोग की भावना से रहते थे।

प्रसिद्ध संस्कृत ग्रंथ ‘ अग्रवैश्यवंशानुकीर्त्तनम्’ के अनुसार भी राजा वल्लभ के पुत्र अग्रसेन थे। राजा अग्रसेन का विवाह कोलपुर के राजा महीधर की सुपुत्री नाग कन्या के साथ हुआ था। महाराजा अग्रसेन जी ने अपनी नवविवाहिता पत्नी के साथ यमुना तट पर घोरे तपस्या की, जिससे देवी महालक्ष्मी प्रसन्न हुईं और आर्शीवाद दिया कि – हे राजा इन तपस्याओं को बंद करो – तुम गृहस्थ हो, गृहस्थाश्रम सब आश्रमों में मुख्य है। मेरी आज्ञा का पालन करो, इससे तुम्हें सब सुख वैभव प्राप्त होंगे तुम्हारे वंश के लोग सदा सुखी ओर संतुष्ट रहेंगे। तुम्हारा वंश सब जातियों और वर्णों में सबसे मुख्य रहेंगा। आज से तुम्हारा यह कुल तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध होगा और तुम्हारी यह प्रजा अग्रवंशीय कहलाएगी। मेरी पूजा तेरे कुल में सदा स्थिर रहेगी और इसीलिए यह सदा वैभव पूर्ण ही रहेगा।

उपर्युक्त मतों के आधार पर हम कह सकते हैं कि महाराजा अग्रसेन जी द्वारा ही अग्रवंश का प्रार्दभाव हुआ, वे ही अग्रवाल जाति के प्रवर्तक हैं।

अभी तक विभिन्न इतिहासकारों में उनके बारे में काफी मतभेद हैं। कोई उन्हें राजा वल्लभ के पुत्र मानते हैं तो कोई उन्हें राजा महीधर के। कई विद्वान उनका काल त्रेता युग में मानते हैं और कोई द्वापर और कोई ईसा से 1 हजार वर्ष पूर्व का ही।